International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN :2581-9925, Impact Factor: 7.555, Volume 07, No. 01(I), January- March, 2025, pp. 50-56

शैक्षिक मनोविज्ञान

डॉ. प्रमोद कुमार शर्मा*
सुभाष चन्द प्रधान**

प्रस्तावना

एक प्रश्न आश्चर्यजनक है कि शिक्षा क्या है? शिक्षा के उल्लेख में विभिन्न विचार उपजते हैं। उत्पत्ति तथा स्पष्टता की दृष्टि से संस्कृत भाषा में 'शिक्षयते इति शिक्षा' बताया गया है। शिक्षा एक अवर्णनीय संपदा है जिसके संपर्क से मानव पूरा विकास करता है। शिक्षा एक स्रोत है जो व्यक्तियों के अंदर निहित भावनाओं को प्रकट कर उसकी प्रकृति को प्रकाशित करती है। अप्रकट ज्ञान शिक्षा की मदद से विकसित होकर मानव और समाज को लाभान्वित करता है। शिक्षा के द्वारा मनुष्य अपना चहुंमुखी विकास कर सकता है।

शिक्षा का शाब्दिक अर्थ

शिक्षा शब्द की उत्पत्ति भाषा की शिक्ष् धातु से हुई है। आंग्ल भाषा में शिक्षा को एजुकेशन कहा गया है। एजुकेशन शब्द की व्युत्पत्ति लैटिन भाषा के तीन शब्दों से हुई है

- Education-act of teaching or training
- Educare-to educate, to bring up, to raise
- Educere-to bring forth, to lead out

शिक्षा की परिभाषाएं

विभिन्न ग्रंथों एवं विद्वानों के मतानुसार शिक्षा की कुछ परिभाषाएं निम्न है।

- महाभारत–विद्या सर्वकार्य साधिका है।
- श्रीमद्भागवत–विद्या मानवता की दायिका है।
- उपनिषद–शिक्षा मानवता को मानवीयकारण की दिशा प्रदान करती है।
- स्वामी विवेकानंद–मनुष्य की आत्मा में ज्ञान का अक्षय भंडार है उसका उद्घाटन करना ही शिक्षा है।
- अरविंद घोष–विद्या ही मानवता की पराकाष्ठा है।

मनोविज्ञान का अर्थ

मनोविज्ञान मन का विज्ञान है। अंग्रेजी भाषा में इसे साइकोलॉजी कहा जाता है।

Psych	=	आत्मा
Logas	=	विज्ञान
Psychology	=	आत्मा का विज्ञान

* असिस्टेंट प्रोफेसर, श्री अग्रसेन स्नात्तकोत्तर शिक्षा महाविद्याल, जामडोली, जयपुर, राजस्थान।
** पी.एच.डी. स्कॉलर, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।

मनोविज्ञान की परिभाषाएं

एस.के. मंगल के अनुसार

''मनोविज्ञान व्यवहार का विज्ञान है जिसमें व्यवहार संबंधी क्रियाओं और अनुभवों का वैज्ञानिक अध्ययन किया जाता है।''

वुडवर्थ के अनुसार

''मनोविज्ञान वातावरणानुसार व्यक्ति के कार्यों का अध्ययन करने वाला विज्ञान है।''

वाटसन के अनुसार

''मनोविज्ञान व्यवहार का शुद्ध विज्ञान है।''

शिक्षा मनोविज्ञान का अर्थ

शिक्षा मनोविज्ञान में मनोविज्ञान का शिक्षा की दृष्टि से विश्लेषण किया जाता है।

स्किनर के अनुसार

''शिक्षा मनोविज्ञान अपना अर्थ शिक्षा से जो सामाजिक प्रक्रिया है और मनोविज्ञान से जो व्यवहार संबंधी विज्ञान है, ग्रहण करता है।''

डॉ रामपाल सिंह वर्मा के अनुसार

''मनोविज्ञान की वह शाखा जो शिक्षा संबंधी समस्याओं के विश्लेषण एवं समाधान पर चिंतन करती है।''

डॉ. मीनाक्षी मिश्रा के अनुसार

''शिक्षा मनोविज्ञान का आशय शिक्षा संबंधी मनोविज्ञान से है। यह मनोविज्ञान का व्यावहारिक रूप है। मानव व्यवहार का अध्ययन करने वाला विज्ञान है।''

शिक्षा मनोविज्ञान किस प्रकार से शिक्षण प्रणाली को प्रभावित करता है इसका हमेशा से ही विचार किया जाता रहा है। प्राचीन काल में शिक्षा हमेशा मनोवैज्ञानिक तरीके से दी जाती थी। प्रवेश से पहले बालक की जांच करके उसकी अभिरुचि, योग्यता, क्षमता, मानसिकता तथा क्रियाशीलता के अनुरूप उसकी शिक्षा की व्यवस्था की जाती थी। आज के युग में शिक्षा को मनोवैज्ञानिक तरीके से दिया जाता है।

शिक्षा मनोविज्ञान, विज्ञान है

अनेकों आचार्यों ने शिक्षा मनोविज्ञान को अनेकों तरीकों से परिभाषित करते हुए स्पष्ट किया है कि शिक्षा मनोविज्ञान शिक्षा के हर एक क्षेत्र का अच्छे तरीके से विश्लेषण करता है। शिक्षा मनोविज्ञान व्यवहार, क्रिया, निरीक्षण, जांच एवं प्रयोग आदि को परिभाषित करता है। शिक्षा मनोविज्ञान को एक विज्ञान के समान ही माना गया है। विज्ञान में किसी विशेष प्रकरण का निश्चित सीमा में अध्ययन किया जाता है। इस कार्य को वैज्ञानिक विधि से किया जाता है अतः वैज्ञानिक विधि ही विज्ञान है।

शिक्षा मनोविज्ञान की प्रकृति

डॉ. एस. के. मंगल के अनुसार शिक्षा मनोविज्ञान की प्रकृति को निम्न प्रकार से समझा जा सकता है।

- शिक्षा मनोविज्ञान को मनोविज्ञान की व्यावहारात्मक शाखा माना गया है।
- शिक्षा मनोविज्ञान, मनोविज्ञान के सिद्धांतों, विधियों, प्रयोगों में विद्यार्थियों के अधिगम में मदद करता है।
- शिक्षा मनोविज्ञान जीवों की सभी क्रियाओं से संबंधित व्यवहार का अध्ययन करता है।
- शिक्षा मनोविज्ञान परंपरा का विज्ञान नहीं है क्योंकि यह निश्चित प्रश्नों पर विचार नहीं कर 'क्या है' संदर्भ में विचार स्पष्ट करता है। इसलिए इसे व्यवहारात्मक विधायक विज्ञान कहा जाता है।

- व्यवहार स्वयं में अनिश्चित, आंतरिक, अविश्वसनीय है अतः शिक्षा मनोविज्ञान को दूसरे विज्ञानों के समान नहीं माना जा सकता है।
- शिक्षा मनोविज्ञान शैक्षणिक क्षेत्र में व्यवहार का अध्ययन करने हेतु वैज्ञानिक विधि का अनुसरण करता है।

शिक्षा मनोविज्ञान का क्षेत्र

शिक्षा मनोविज्ञान का क्षेत्र अत्यधिक विशाल है इस विशालता के अनुसार शिक्षा मनोविज्ञान को सीमित नहीं किया जा सकता। शिक्षा मनोविज्ञान में तथ्यों, सिद्धांतों, नियमों, उपनियमों को शिक्षा के काम में जो व्यवस्थित रूप से कार्य करने के लिए उपयोग में लाया जाता है। शिक्षा मनोविज्ञान में शिक्षक–शिक्षार्थी के व्यवहारों का अध्ययन किया जाता है। शिक्षा के निम्नलिखित पक्षों को शिक्षा मनोविज्ञान में सम्मिलित किया जा सकता है–

- बालक की मानसिक क्रियाओं का अध्ययन।
- बालक के व्यवहार का अध्ययन।
- बालक की संवेगात्मक तथा वेगात्मक क्रियाओं का अध्ययन।
- वंशानुक्रम तथा वातावरण का अध्ययन।
- बाल विकास की अवस्थाओं का अध्ययन।
- अधिगम प्रक्रिया का अध्ययन।
- रुचि तथा अरुचि का अध्ययन करना।
- प्रेरणा एवं मूल प्रवृत्तियों का अध्ययन।
- व्यक्तिगत विभिन्नताओं का अध्ययन।
- अपराधी प्रवृत्ति वाले व्यक्तियों का अध्ययन।
- असाधारण बालकों का अध्ययन।
- मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन।
- समूह गतिशीलता का अध्ययन।
- समूह व्यवहार का अध्ययन।
- समायोजन का अध्ययन।
- निर्देशन और परामर्श का अध्ययन।
- अचेतन मन की क्रियाओं का अध्ययन।
- मनोवैज्ञानिक प्रयोगों का अध्ययन।
- अध्यापन विधियों का अध्ययन।
- पाठ्यक्रम निर्माण संबंधी अध्ययन।
- शिक्षा संबंधी समस्याओं का अध्ययन।
- मापन एवं मूल्यांकन का अध्ययन।
- अध्यापक मूल्यांकन का अध्ययन।
- अनुशासन संबंधी समस्याओं का अध्ययन।
- विद्यालय, महाविद्यालय परिवेश का अध्ययन।

- व्यक्तित्व का अध्ययन।
- मनोभावों का अध्ययन।
- बुद्धि का अध्ययन।
- भावनाओं का अध्ययन।
- मनोदशाओं का अध्ययन।

शिक्षक के लिए शिक्षा मनोविज्ञान का महत्व

एक सफल शिक्षक को अध्ययन–अध्यापन के संबंध में शिक्षा मनोविज्ञान का ज्ञान अति आवश्यक है। इस ज्ञान के अभाव में अध्यापक शिक्षण क्रम को व्यवस्थित रूप से नहीं चला सकता। एक सफल शिक्षक के लिए निम्नलिखित तत्वों का ज्ञान आवश्यक है।

- **स्वयं का ज्ञान**

अध्यापक को स्वत्व का ज्ञान आवश्यक है। शिक्षा मनोविज्ञान अध्यापक की योग्यता, क्षमता, प्रतिभा, व्यक्तित्व,गुण आदि का ज्ञान करता है। स्वयं के ज्ञान के द्वारा कार्य की प्रेरणा देता है।

- **विषय की तैयारी**

कक्षा कक्ष में किस विषय को किस तरह पढ़ना है, प्रस्तुतीकरण की विद्या का ज्ञान इसके द्वारा कराया जाता है, जिससे कक्षा के सामने विषय को महत्वपूर्ण तरीके से प्रस्तुत किया जा सके। यदि विषय का सारा ज्ञान होता है तो शिक्षक बिना किसी समस्या के अध्यापन कार्य करता है।

- **अचेतन मन का ज्ञान**

बालक के अचेतन मन का ज्ञान एक लोहे के चने चबाने की तरह बहुत ही कठिन कार्य है। शिक्षा मनोविज्ञान का ज्ञाता अध्यापक शिक्षा की विभिन्न विधियों के माध्यम से बालक के अंतराल को छूकर उसकी रुचि एवं प्रवृत्ति का ज्ञान कर लेता है तथा उसी के अनुसार अध्यापन कार्य की व्यवस्था करता है।

- **शिक्षण विधियों के संशोधन में सहायक**

शिक्षा मनोविज्ञान शिक्षण विधियों को परिमार्जित करके शिक्षण क्रम को व्यवस्थित रूप प्रदान करता है। जिन विधियों को शिक्षक महत्वपूर्ण नहीं समझता उनकी अवहेलना या उनको परिमार्जित करके प्रस्तुत करता है तथा जिन विधियों को महत्वपूर्ण समझता है उनको क्रमबद्ध ढंग से प्रस्तुत करता है इस प्रकार विधियों का संशोधन एवं समुचित व्यवस्थापन शिक्षा मनोविज्ञान के द्वारा किया जाता है।

- **बाल विकास का ज्ञान**

बालक का शैक्षिक विकास किस प्रकार हो इसका ज्ञान शिक्षक मनोविज्ञान द्वारा ही प्राप्त करता है। बालक की मूल प्रवृत्तियों को पूर्ण रूप देने में सहायता मिलती है।

- **बाल स्वभाव एवं व्यवहार का ज्ञान**

शिक्षक को शिक्षा मनोविज्ञान के द्वारा बालक के स्वभाव, व्यवहार का पता चलता है। उसके इस प्रकार के ज्ञान से शिक्षण व्यवस्था को उपयुक्त रूप से देने में सहायता मिलती है।

- **अधिगम प्रक्रिया का अध्ययन**

शिक्षा मनोविज्ञान के द्वारा अधिगम की प्रक्रिया आसान हो जाती है। अध्ययन क्रम में अधिगम विशेष उपयोगी है। सीखना बालक की जन्मजात प्रवृत्ति है। शिक्षा मनोविज्ञान के ज्ञान के द्वारा शिक्षक इस प्रवृत्ति को गतिशील बनता है। अधिगम में शिक्षा के पठार एवं शिक्षा के बदलाव का ज्ञान होता है।

- **वंशानुक्रम एवं वातावरण का ज्ञान**

शिक्षक मनोविज्ञान के द्वारा यह जानने की पूर्ण कोशिश करता है कि छात्र का वंशानुक्रम एवं वातावरण किस प्रकार का था। उसी के अनुसार उसे वह शिक्षण प्रक्रिया की ओर पर्वत्त करता है।

- **व्यक्तिगत अन्तरों का ज्ञान**

बालकों में व्यक्तिगत विभिन्नता पाई जाती है। ये विभिन्न वर्ग, विभिन्न समाज, विभिन्न वातावरण से आते हैं। बालक की विभिन्न क्षमताओं, योग्यताओं की जानकारी करके उनकी योग्यता का अंतर ज्ञात करके शिक्षण व्यवस्था की जाती है।

- **शारीरिक क्रियाओं का अध्ययन**

बालक कोतूहल प्रधान होते हैं। वे शिक्षण कार्य के समय किस प्रकार की अनुक्रियाएं कर रहे हैं। उन अनुक्रियाओं का कक्षा कक्ष के व्यवहार पर क्या प्रभाव पड़ रहा है आदि का पूर्ण अध्ययन एक मनोविज्ञान ज्ञाता शिक्षक ही कर सकता है।

- **थकान एवं रुचि का अध्ययन**

बालक में आलस्य या थकान के क्या कारण है। थकान के कारणों को ज्ञात करके उपचार की उपयुक्त व्यवस्था की जाती है। तथा बालक की रुचि को महत्व देकर उसकी रुचि के अनुरूप शिक्षा व्यवस्था की जाती है।

- **बाल विकास की अवस्थाओं का ज्ञान**

बाल विकास की अनेकों अवस्थाएं हैं। शैशवावस्था, पूर्व बाल्यकाल, पूर्व किशोरावस्था एवं किशोरावस्था विकास की अवस्थाओं में विभिन्न बदलाव आते हैं। अतः शिक्षक इन अवस्थाओं में होने वाले बदलाव का ज्ञान शिक्षा मनोविज्ञान के द्वारा ही प्राप्त करता है।

- **बाल अपराध का ज्ञान**

बालक स्वभाव से चंचल होते हैं। चंचलता के कारण वे अनेकों अपराध कर बैठते हैं। अतः अपराधों के कारण उपचारों का ज्ञान भी शिक्षा मनोविज्ञान द्वारा ही होता है।

- **पाठ्यक्रम में संशोधन**

पाठ्यक्रम में लचीलापन होना उसका गुण है। एक सफल शिक्षक आवश्यकता अनुसार देश, काल, पात्र के अनुसार पाठ्यक्रम में आवश्यक बदलाव शिक्षा मनोविज्ञान की सहायता से कर सकता है।

- **चरित्र निर्माण**

विद्यालय समाज के लिए चरित्र की प्रमुखता है। शिक्षक मनोविज्ञान प्रक्रिया के द्वारा आदर्श चरित्र का निर्माण प्रस्तुत करता है।

- **निर्देशन और मार्गदर्शन में सहायक**

शिक्षा मनोविज्ञान शिक्षक के निर्देशन एवं मार्गदर्शन में मददगार सिद्ध होता है। अध्यापक इसके द्वारा सफलतापूर्वक शिक्षण क्रम को संचालित कर सकता है।

- **स्मृति अवधान थकान संबंधी प्रयोगों का अध्ययन**

शिक्षा मनोविज्ञान के द्वारा शिक्षक बालक की स्मृति, अवधान, थकान संबंधित प्रयोगों का अध्ययन करके उपयुक्त रूप से शिक्षण क्रम को संचालित कर सकता है।

- **अनुशासन**

शिक्षण कार्य हेतु अनुशासन अपना विशेष अर्थ रखता है। दमनात्मक, दंडात्मक अनुशासन के स्थान पर मनोवैज्ञानिक विधि के द्वारा स्व अनुशासन की प्रेरणा दी जा सकती है।

- **समस्या प्रधान बालकों की सहायता**

समस्या प्रधान बालक कहीं कक्षा व्यवहार में कोई समस्या तो पैदा नहीं कर रहा है इसका ध्यान रखते हुए समस्या के हल का अन्वेषण करके शिक्षण की व्यवस्था की जाती है।

- **मापन एवं मूल्यांकन में सहायता**

मापन एवं मूल्यांकन में नई विधियों की सहायता लेकर विद्यार्थियों का मूल्यांकन किया जाता है। इस प्रकार बालकों की योग्यता, कार्य क्षमता, अभिवृद्धि एवं विकास, अधिगम और समंजन इत्यादि का ज्ञान होना चाहिए।

इन तथ्यों के अतिरिक्त कुछ अन्य तथ्य भी हैं जिनकी जानकारी शिक्षक को होना चाहिए।

- बालक को प्रकृति का ज्ञान देते हुए उपयुक्त शिक्षा देना।
- बालक को विभिन्न विधियों, विधाओं का विचारपूर्वक कार्य करने की जानकारी देना।
- अधिगम की प्रकृति के अनुसार शिक्षा देना।
- मापन और मूल्यांकन का ज्ञान एवं प्रशिक्षण देना।
- अभिवृद्धि और विकास की जानकारी देना।
- आदर्श समायोजन में विद्यार्थियों की सहायता।

एक सफल शिक्षक को शिक्षण प्रक्रिया शुरू करने से पहले शिक्षा मनोविज्ञान के सभी तथ्यों का ज्ञान प्राप्त करना जरूरी है। वास्तव में एक सफल शिक्षक के लिए शिक्षा मनोविज्ञान विधि उपयोगी विधि है। इसके माध्यम से दी जाने वाली शिक्षा से ही ज्ञान में संपूर्णता आ सकती है। शिक्षा मनोविज्ञान अध्यापक को कर्तव्य, दायित्व का पालन करने में हर समय मदद कर शिक्षक शिक्षण विधा का मार्ग प्रशस्त कर सफल शिक्षण की ओर ले जा सकने में सक्षम है ।

शिक्षा मनोविज्ञान की विधियां

यह तथ्य स्पष्ट है कि हर एक विषय की अपनी–अपनी अध्ययन पद्धतियां या विधियां होती है। इन विधियों के द्वारा शिक्षण क्रम को संचालित किया जाता है। इस संदर्भ में यह तथ्य स्पष्ट करना है की पद्धतियां क्या है? या विधियां क्या है?

रामबाबू गुप्ता के अनुसार

''किसी निश्चित व्यवस्था के अनुसार अध्ययन करना ही पद्धति या विधि कहलाता है। साधारण भाषा में इसे कार्य करने का ढंग कहा जाए तो अनुचित नहीं होगा।''

पी. डी. पाठक एवं त्यागी के अनुसार

''शिक्षा मनोविज्ञान शिक्षा विधियों का प्रयोग करता है। विज्ञान की विधियों का प्रयोग करता है। विज्ञान की विधियों की मुख्य विशेषताएं हैं विश्वसनीयता, यथार्थता, विशुद्धता, वस्तुनिष्ठता और निष्पक्षता। शिक्षा मनोविज्ञान अपने शोध कार्यों में अपनी समस्याओं को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखते हैं और उसका समाधान करने के लिए वैज्ञानिक विधियों का प्रयोग करते हैं।''

सारांश में हम कह सकते हैं कि एक आदर्श रूप से सुव्यवस्थित तरीके से विषय वस्तु का उपस्थापन, इसकी समुचित व्याख्या जिस प्रकार प्रभावशाली तरीके से प्रस्तुत की जाती है इसके लिए जिस प्रक्रिया का अवलंबन करते हैं वही विधि कहलाती है। संक्षिप्त में हम कह सकते हैं कि सुव्यवस्थित कार्य प्रक्रिया शिक्षण प्रक्रिया ही विधि है।

शिक्षा मनोविज्ञान की विधियों को निम्नलिखित तीन भागों में बांटा गया है–

- आत्मगत निरीक्षण विधि
- बहीदर्शन विधि
- अंतरानुभवों का संचय या गाथा विधि

आत्म निरीक्षण विधि

आत्म निरीक्षण विधि मनोविज्ञान की एक परंपरागत विधि मानी जाती है। पूर्व काल में मनोवैज्ञानिक इसी विधि के द्वारा मानसिक क्रियाओं, प्रतिक्रियाओं का अध्ययन एवं परीक्षण किया करते थे। अनुभव का पुन स्मरण, भावनाओं का परीक्षण, निरीक्षण एवं मूल्यांकन इसी प्रक्रिया के द्वारा किया जाता है।

बहीदर्शन विधि

बहीदर्शन विधि के परिणाम स्पष्ट नहीं थे, परिणामतः मनोवैज्ञानिकों ने एक नई विधि बहीदर्शन का अन्वेषण किया। बहीदर्शन विधि में दूसरे के व्यवहार तथा मानसिक दशा की स्थिति के अध्ययन के साथ–साथ उसकी शारीरिक स्थिति, शारीरिक परिवर्तन तथा अन्य प्रतीक्रियाओं का भी अध्ययन किया जा सकता है इसलिए यह पद्धति प्रथम विधि से कहीं अधिक व्यापक और उपयोगी है।

अन्तरानुभवों का संचय या गाथा विधि

पी .डी. पाठक एवं त्यागी के अनुसार

इस विधि में व्यक्ति अपने किसी पूर्व अनुभव या व्यवहार का वर्णन करता है। मनोवैज्ञानिक सुनकर लेखा तैयार करता है और इसके आधार पर निष्कर्ष निकालता है। इस विधि की विशेषता यह है कि इस विधि में पहले के अनुभवों का एवं पूर्व व्यवहारों का लेखा–जोखा तैयार करके निष्कर्ष दिया जाता है इस विधि में विश्वसनीयता का अभाव है कारण कि मिथ्या कथन, भ्रांतिपूर्ण विचार, कल्पना में बात करना, स्मृति का अभाव, भावों या संवेगों की प्रधानता इत्यादि यथार्थता के कारण से सर्वथा अभावता हो जाता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. अग्रवाल जे.सी. : शैक्षिक मनोविज्ञान की आवश्यकताएं, विकास पब्लिशिंग हाउस, प्राइवेट लिमिटेड, 1995.
2. चौहान एस.एस. : उन्नत शैक्षिक मनोविज्ञान, विकास पब्लिकेशन हाउस, एन.डी.1990.
3. शर्मा आर.ए. :– आधारभूत शैक्षिक मनोविज्ञान, आर लाल बुक डिपो, 1996.
4. देशमुख एम.सी. :– कक्षा कक्ष में सक्रियता, एस चंद एवं कंपनी, दिल्ली, 1984

❖◆❖